नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

निगरानी से ही सुधरेगी सरकारी स्कूलों की तस्वीर

मध्यप्रदेश के सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की ई-अटेंडेंस के बाद अब विद्यार्थियों की उपस्थिति की ऑनलाइन निगरानी शुरू करने का शिक्षा विभाग का फैसला स्वागत योग्य है. शिक्षा व्यवस्था में सुधार की शुरुआत इस बुनियादी सवाल से ही होनी चाहिए कि स्कूल में बच्चे नियमित रूप से आ भी रहे हैं या नहीं. जब तक विद्यार्थी कक्षा में नहीं होंगे, तब तक शिक्षा की गुणवत्ता और परीक्षा परिणाम सुधारने की कोई भी कवायद पूरी तरह सफल नहीं हो सकती.

प्रदेश में करीब 8400 हाईस्कूल और 5100 हायर सेकंडरी स्कूल हैं, जिनमें 25 से 26 लाख विद्यार्थी पढ़ रहे हैं. इतनी बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति की निगरानी केवल कागजी रजिस्टरों के भरोसे संभव नहीं है. एजुकेशन पोर्टल 3.0 पर प्रतिदिन कक्षा और स्कूलवार उपस्थिति दर्ज होने से शिक्षा विभाग के पास पहली बार ऐसा बड़ा डेटा उपलब्ध होगा, जिसके आधार पर यह पता लगाया जा सकेगा कि किन इलाकों में बच्चे स्कूल से दूर हो रहे हैं. 70 प्रतिशत से कम उपस्थिति वाले स्कूलों को रेड जोन और 50 प्रतिशत से कम वाले स्कूलों को ग्रे जोन में रखना उपयोगी व्यवस्था है. लेकिन असली परीक्षा इस व्यवस्था की निगरानी से आगे शुरू होगी. रेड या ग्रे जोन में आने वाले स्कूलोंके आंकड़े देखकर यदि अधिकारी केवल रिपोर्ट तैयार करते रहे तो इस पूरी कवायद का उद्देश्य ही अधूरा रह जाएगा.

जरूरत इस बात की है कि कम उपस्थिति वाले स्कूलों तक अधिकारी पहुंचें और यह पता लगाएं कि आखिर बच्चे स्कूल क्यों नहीं आ रहे हैं. क्या आर्थिक मजबूरी उन्हें पढ़ाई से दूर कर रही है? क्या स्कूल की दूरी या परिवहन की समस्या है ? क्या परिवारों में शिक्षा को लेकर जागरूकता का अभाव है ? या फिर विद्यालय का वातावरण ही ऐसा है कि बच्चों की स्कूल आने में रुचि नहीं है? इन सवालों के जवाब तलाशना और समाधान की जिम्मेदारी तय करना भी ऑनलाइन मॉनीटरिंग का हिस्सा होना चाहिए.

शिक्षा विभाग का इस वर्ष 95 प्रतिशत रिजल्ट का लक्ष्य है. लक्ष्य महत्वाकांक्षी है और उसका स्वागत किया जाना चाहिए. लेकिन बेहतर परिणाम केवल परीक्षा के दिनों में तैयारी कराने से नहीं आएंगे. इसके लिए पूरे साल विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति, शिक्षकों की जवाबदेही और पढ़ाई के स्तर पर लगातार निगरानी जरूरी है. इसलिए अगस्त में चल रहा ट्रायल और सितंबर से प्रस्तावित पूर्ण क्रियान्वयन महज एक अभियान बनकर न रह जाए. इस व्यवस्था को स्थायी बनाया जाना चाहिए. हर सात दिन में डेटा की समीक्षा हो, हर महीने कम उपस्थिति वाले स्कूलों की जमीनी स्थिति की जांच हो और अगले महीने यह देखा जाए कि सुधार हुआ या नहीं. इसके साथ शिक्षा विभाग को विद्यार्थियों की उपस्थिति के साथ मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था की भी इसी गंभीरता से निगरानी करनी चाहिए. स्कूल में बच्चा आया, लेकिन उसे निर्धारित समय पर गुणवत्तापूर्ण और पौष्टिक भोजन मिला या नहीं, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण सवाल है. सरकारी स्कूल केवल परीक्षा परिणाम सुधारने की जगह नहीं हैं. वे लाखों बच्चों के भविष्य की नींव हैं. इसलिए निगरानी का उद्देश्य सिर्फ 95 प्रतिशत रिजल्ट हासिल करना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि हर बच्चा नियमित स्कूल आए, उसे अच्छी शिक्षा मिले और सम्मानजनक वातावरण के साथ पौष्टिक भोजन भी मिले. ऑनलाइन मॉनीटरिंग इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है. दरअसल,

अब सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि स्क्रीन पर दिखने वाले आंकड़े जमीन पर दिखाई देने वाले बदलाव में भी बदलें. निगरानी अभियान नहीं, व्यवस्था बनेगी तभी सरकारी स्कूलों की तस्वीर वास्तव में बदलेगी.

वैश्विक अस्थिरता में भारत की सधी हुई चाल

ओजस्कर पाण्डेय

> बदलती विश्व व्यवस्था में भारत के पास एक ऐतिहासिक अवसर है — स्वयं को न केवल एक क्षेत्रीय शक्ति, बल्कि एक जिम्मेदार और प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने का. इसके लिए जरूरी है कि नीति-निर्माता अल्पकालिक लाभ की बजाय दीर्घकालिक रणनीतिक हितों को प्राथमिकता दें, कूटनीतिक लचीलेपन को बनाए रखें, और भारत की विदेश नीति की स्वतंत्र एवं संप्रभु पहचान को और अधिक मज़बूत करें. रणनीतिक स्वायत्तता केवल एक कूटनीतिक शब्दावली नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की उस भावना का प्रतीक है, जो उसे बहुध्रुवीय विश्व में एक अद्वितीय और सम्मानित स्थान दिलाने में सक्षम है. आने वाला दशक यह तय करेगा कि भारत इस अवसर का कितना सुनियोजित और प्रभावी उपयोग कर पाता है.

इक्कीसवीं सदी का तीसरा दशक अंतरराष्ट्रीय राजनीति के लिहाज़ से अभूतपूर्व उथल-पुथल का साक्षी बन रहा है. अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा, रूस-यूक्रेन युद्ध का लंबा खिंचना, पश्चिम एशिया में लगातार बनी हुई अस्थिरता, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में उथल-पुथल, और तकनीकी वर्चस्व की नई होड़ — इन सबके बीच भारत जैसे उभरते हुए बड़े देश के लिए विदेश नीति का संचालन एक अत्यंत नाज़ुक संतुलन साधने जैसा हो गया है. ऐसे समय में भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' यानी किसी एक खेमे से बंधे बिना अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप स्वतंत्र निर्णय लेने की नीति, न केवल प्रासंगिक बनी हुई है, बल्कि पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गई है.

स्वतंत्रता के तुरंत बाद, जब विश्व दो महाशक्तियों- अमेरिका और सोवियत संघ- के बीच शीत युद्ध की चपेट में था, तब भारत ने जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी. यह विचार क्रांतिकारी था: नवस्वतंत्र और विकासशील देश किसी भी महाशक्ति के खेमे में शामिल हुए बिना भी अपनी संप्रभुता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सकते हैं. उस दौर में यह नीति भारत की कमज़ोर आर्थिक स्थिति और सैन्य क्षमता के बावजूद उसे एक नैतिक और कूटनीतिक ऊंचाई प्रदान करती थी. समय बदला, सोवियत संघ का विघटन हुआ, शीत युद्ध समाप्त हुआ, और विश्व एकध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ा. इक्कीसवीं सदी में, विशेषकर चीन के उदय और अमेरिका की सापेक्ष शक्ति में आई कमी के साथ, विश्व अब बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर है. ऐसे में भारत की पुरानी गुटनिरपेक्षता की अवधारणा ने एक नया और अधिक व्यावहारिक रूप ले लिया है, जिसे आज 'रणनीतिक स्वायत्तता' कहा जाता है. यह केवल किसी गुट से दूरी बनाए रखने की नीति नहीं है, बल्कि हर मुद्दे पर, हर साझेदार के साथ, अपने राष्ट्रीय हित के अनुसार स्वतंत्र निर्णय लेने की सामर्थ्य है.

आज भारत की विदेश नीति की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह एक साथ परस्पर विरोधी शक्तियों के साथ गहरे संबंध बनाए रखने में सफल रहा है. एक ओर भारत और अमेरिका के बीच रक्षा, तकनीक, अंतरिक्ष और व्यापार के क्षेत्र में सहयोग तेज़ी से बढ़ा है. 'इनिशिएटिव ऑन क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी' जैसे कार्यक्रमों के ज़रिए दोनों देश सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रक्षा उत्पादन में साझेदारी को गहरा कर रहे हैं. साथ ही, क्वाड यानी भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के मंच के ज़रिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्वतंत्र और नियम-आधारित व्यवस्था की वकालत की जा रही है. दूसरी ओर, भारत ने रूस के साथ अपने दशकों पुराने रक्षा और ऊर्जा सहयोग को भी बनाए रखा है. रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान जब पश्चिमी देशों ने रूस पर व्यापक प्रतिबंध लगाए, तब भी भारत ने रियायती दरों पर रूसी कच्चे तेल की खरीद जारी रखी — एक ऐसा निर्णय जिसकी आलोचना पश्चिमी मीडिया में हुई, लेकिन जिसने भारत की ऊर्जा सुरक्षा और मुद्रास्फीति नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. यह दोहरा संतुलन आलोचकों को असहज कर सकता है, और अक्सर इसे 'दोनों तरफ से लाभ उठाने' की नीति कहकर आलोचना की जाती है, लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से यह भारत के दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने वाला एक परिपक्व दृष्टिकोण है.

भारत की विदेश नीति की सफलता इसी बात में झलकती है कि वह परस्पर विरोधी विचारधाराओं वाले मंचों पर भी सक्रिय भागीदार बना हुआ है. एक ओर क्वाड है, जिसे चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने वाला मंच माना जाता है, तो दूसरी ओर ब्रिक्स है, जिसमें रूस और चीन प्रमुख भूमिका निभाते हैं. भारत दोनों मंचों पर समान रूप से सक्रिय है, जो दर्शाता है कि वह किसी एक विचारधारा या खेमे में बंधकर नहीं, बल्कि मुद्दा-आधारित साझेदारी के सिद्धांत पर काम करता है. जी 20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने स्वयं को 'ग्लोबल साउथ की आवाज़' के रूप में प्रस्तुत किया. अफ्रीकी संघ को जी 20 का स्थायी सदस्य बनवाने में भारत की पहल उल्लेखनीय रही, जिसने यह संदेश दिया कि भारत विकसित और विकासशील देशों के बीच एक विश्वसनीय सेतु का काम कर सकता है. इसी तरह, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार, जलवायु न्याय, और वैश्विक ऋण संकट जैसे मुद्दों पर भारत ने विकासशील देशों के हितों की मुखर वकालत की है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

कांग्रेस को अब आया आलीराजपुर का ध्यान

संजय व्यास

आगामी निकाय-पंचायत चुनाव को साल भर भी नहीं बचा है, ऐसे में कांग्रेस की आलीराजपुर को लेकर चिंता बढ़ गई है. यह जिला 8 माह से अध्यक्ष विहीन है. गत दिसंम्बर में तत्कालीन कांग्रेस जिला अध्यक्ष मुकेश पटेल उनकी बात को पार्टी द्वारा नजरअंदाज किए जाने से नाराज होकर इस्तीफा दे चुके हैं. उल्लेखनीय है कि 2023 का विधान सभा चुनाव कुछ ही अंतर से हार गए थे.

इसके लिए उन्होंने पार्टी के तीन नेताओं पर भीतरघात कर एक निर्दलीय के लिए काम करने के आरोप लगाए थे और अपनी हार के जिम्मेदार उक्त तीनों नेताओं को कदाचरण के लिए पार्टी से बाहर करने की मांग की थी, पर समय निकलता जा रहा था और वे कार्रवाई से छिटके रहे. यहां तक ते ठीक था, लेकिन मुकेश पटेल तब उखड़ गए जब उनकी हार का कारण बने उक्त निर्दलीय का कांग्रेस में प्रवेश हो गया व प्रवेश कार्यक्रम के दौरान तथाकथित तीनो भीतरघातियों को सम्मनान मंच पर शोभायमान किया गया.

इसी घटना के बाद मुकेश पटेल ने इस्तीफे का मन बना लिया था. आज जिलाध्यक्ष विहीन आलीराजपुर में गुटबाजी की वजह से संगठन बिखरा हुआ है और पार्टी कार्यकर्ताओं के दिशाहीन क्रिया कलापों से ग्राम-फालियों तक कांग्रेस की पकड़ प्रभावित हो रही है. विधान सभा चुनाव-2028 के पूर्व होने वाले पंचायत चुनाव की ओर अब पार्टी का ध्यान गया है.

क्षेत्र में दबदबा बनाने के लिए ज्यादा से ज्यादा पंचायत जीतने की मंशा के साथ कांग्रेस ने आलीराजपुर जिलाध्यक्ष नियुक्ति की कवायद शुरु की है.

बिदाई पार्टी हुई, किंतु गये नहीं

हाल के तबादलों में बुरहानपुर नगर पुलिस अधीक्षक गौरव पाटिल का छिंदवाड़ा ट्रांसफर हो गया. पुलिस स्टाफ ने समारोह आयोजित कर बिदाई भी दे दी. उनके स्थानापन्न के तौर पर इंदौर से विनोद सिंह कुशवाहा की पदस्थापना के आदेश हुए, पर बताया जा रहा है कि वे अब तक पदभार ग्रहण करने नहीं पहुंचे. अब स्थिति यह है कि बिदाई के बाद भी गौरव पाटिल वहीं हैं.

क्या ओम प्रकाश को मिलेगी कमान!

आलीराजपुर जिला कांग्रेस में यहां के कद्दावर नेता रहे वेस्ता पटेल के परिवार का वर्चस्व है. उनके बड़े पुत्र पूर्व विधायक मुकेश पटेल जिलाध्यक्ष का पद छोड़ चुके हैं. छोटी बहू सेना महेश पटेल आलीराजपुर नगर पालिका अध्यक्ष के साथ जिले की जोबट विधान सभा से विधायक हैं. सेना महेश पटेल के पुत्र पुष्पराज पटेल युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष हैं. महेश पटेल पूर्व में जिला अध्यक्ष की कमान संम्हाल चुके हैं और वरिष्ठ कांग्रेस नेता कांति लाल भूरिया से विवाद के बाद एक बार पार्टी से बाहर हो चुके हैं, सो अबकी बार जिला अध्यक्ष के पद से पटेल परिवार को दूर रखे जाने की चर्चा है. रणनीतिक तौर पर पार्टी का यह भी सोचना है कि इस बार जिलाध्यक्ष का पद किसी अनुसूचित जाति की बजाए सामान्य वर्ग को दिया जाए. ऐसे में चर्चा में कई नाम सामने आ रहे है, पर पार्टी कर्ताधर्ताओं की निगाह पूर्व जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश राठौर व राजेंद्र टवली पर है. दोनों तेली समाज से आते हैं. संभावना जताई जा रही है कि इन दोनों में से ही किसी का चयन होगा. मुकेश पटेल तथा महेश पटेल की राजनीति की शैली अलग-अलग है और ओम प्रकाश राठौर सहजता से दोनों के साथ समन्वय बैठाकर चल सकते है. वहीं राजेंद्र टवली के खाते में उनके परिवार से मिला रणनीतिक कौशल है. पूर्व विधायक मगन सिंह पटेल को आलीराजपुर विधान सभा से 1972 से 1998 तक (1977 छोड़कर) लगातार 6 बार विधायकी जितवाने का श्रेय राजेंद्र टवली के पिता को जाता है. चूंकि राठौर को जिलाध्यक्ष पद सम्हालने का पूर्व अनुभव है तो देखते हैं कि उन्हें फिर से कमान मिलती है या चर्चाओं में ही नाम खत्म.

प्रशांत किशोर कहां लगाएंगे जोर !

प्रधानमंत्री मोदी से लेकर पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदरसिंह तक प्रशांत किशोर की संस्था की सलाह ले चुके हैं. ऐसा नहीं लगता कि महाराष्ट्र की राजनीति में पीके कोई खास हेरफेर करवा पाएंगे.

एक बार फिर चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर चर्चा में हैं. पहली बात तो यह कि उन्होंने बिहार की बांकीपुर सीट पर बहुमत से चुनाव जीत लिया, जो 3 दशकों से बीजेपी के कब्जे में थी. यह बीजेपी को करारा झटका था, जिसने पूर्व मुख्यमंत्री नीतीशकुमार को राज्यसभा में भेजकर बिहार से दूर कर दिया था और सम्राट चौधरी जैसे अक्खड़ नेता को वहां का सीएम बनाया था. प्रशांत किशोर ने बीजेपी की शैली को पहचाना और उसी के समान बूथ स्तर पर अपने भरोसेमंद कार्यकर्ताओं को तैनात किया था. अब वह सक्रिय राजनति तो करेंगे ही लेकिन चुनावी रणनीतिकार की भूमिका भी निभाते रहेंगे. उन्होंने महाराष्ट्र की उपमुख्यमंत्री व राकांपा (अजीत) की प्रमुख सुनेत्रा पवार व उनके पुत्र पार्थ पवार के साथ 5 घंटे तक चर्चा की. इसकी वजह से पार्टी के पुराने नेता बेचैन हो गए. कहते हैं कि प्रशांत किशोर ने सुनेत्रा पवार को सलाह दी महाराष्ट्र में पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बदलना चाहिए. उन्होंने कहा कि राकांपा को राज्य में अपनी ताकत बढ़ानी चाहिए. सवाल यह है कि महाराष्ट्र में 3 दलों की युति सरकार में राकांपा अपनी ताकत तभी बढ़ा सकती है, जब वह बीजेपी और शिवसेना (शिंदे) को कमजोर करे. ऐसी कोई संभावना नजर नहीं आती, क्योंकि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में बीजेपी काफी मजबूत है और उसकी सीटें भी सहयोगी पार्टियों से ज्यादा हैं. एकनाथ शिंदे को दिल्ली में अमित शाह का पूरा सहयोग और समर्थन मिला हुआ है. अजीत पवार के जीवित रहते उनकी पार्टी का जो दबदबा था, वैसा आज नजर नहीं आता. सुनेत्रा पवार वैसी प्रभावशाली नहीं दिखाई देतीं. प्रशांत किशोर ने बिहार में बीजेपी उम्मीदवार को हराकर सीट जीती, इसलिए बीजेपी उन्हें हर हालत में नापसंद करेगी. जब तक प्रशांत किशोर प्रत्यक्ष राजनीति में नहीं उतरे थे, तब वह अन्य पार्टियों के लिए चुनावी स्ट्रेटेजी बनाते थे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

शाह का नहीं दिखना कैसी है पहेली किसके आदेश पर चली थी गोली

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कांग्रेस नेता राहुल गांधी का सवाल है कि गृहमंत्री अमित शाह संसद में क्यों नहीं आते ? उन्हें जवाब देते हुए संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू कहते हैं कि शाह रोज संसद में आते हैं और यहां देर रात तक मौजूद रहते हैं. आखिर यह कैसी पहेली है ?'

हमने कहा, 'यह अपनी-अपनी दृष्टि है. बीजेपी नेताओं और भक्तों को मोदी और अमित शाह का दिव्य दर्शन सदैव होता रहता है, क्योंकि वह उनके हृदय में बसे हैं. एक शेर है- जब जरा गर्दन झुकाई, देख ली तस्वीरे यार ! दूसरी ओर विपक्ष कह रहा है छुपने वाले सामने आ, छुप-छुपके मेरा जी ना जला, सूरज से किरन, बादल से पवन कब तलक छुपेगी ये तो बता! विपक्ष मांग कर रहा है- जरा सामने तो आओ छलिए, छुप-छुप छलने में क्या काम है! विपक्ष के लिए अमित शाह इनविजिबल मैन या अदृश्य इंसान हो गए हैं. किरेन रिजिजू मानते हैं कि विपक्ष में दृष्टिदोष है. संसद में अमित शाह मौजूद हैं, लेकिन विपक्ष उन्हें देख नहीं पा रहा है. नया संसद भवन अति विशाल है.

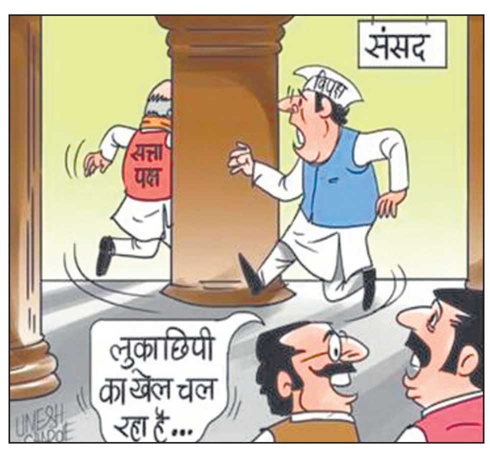

कोई उसके किसी कक्ष या टॉयलेट में छुपा हो तो उसे कैसे देखा जा सकता है ?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, विपक्ष को शाह को देखने की इतनी व्यग्रता है तो सीसीटीवी पर देखकर पता लगाए कि वह संसद में किधर से आते हैं और चुपचाप कहां छुप जाते हैं. परिस्थिति ऐसी है कि छुप गया कोई रे दूर से पुकार के, दर्द अनोखे हाय, दे गया प्यार के ! छुपना भी एक कला है. वी. शांताराम की फिल्म का गीत था- तू छुपी है कहां, मैं तड़पता यहां! एक धार्मिक फिल्म का गीत था- मुझी में छिप गए मुझी से दूर, ये कैसा दस्तूर !'

हमने कहा, 'आयुष्मान खुराना और कीर्ति सेनन की फिल्म का नाम था लुकाछिपी. अब संसद में लुकाछिपी जारी है. राहुल अमित शाह से पूछना चाहते हैं कि जंतर-मंतर पर प्रदर्शनकारी युवाओं पर पैलट गन किसके आदेश पर चलाई गई ? यदि शाह कबूल करते हैं कि गन उनके आदेश पर चलाई गई, तो वह अत्याचारी व निरकुंश माने जाएंगे और यदि कहेंगे कि उन्हें इस बारे में कुछ भी नहीं पता, तो अक्षम माने जाएंगे. यही वजह है कि वह सदन में आने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं. संसद भवन में आना और सदन में आना दोनों अलग बातें हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12346 - डॉ. सागर खादीवाला

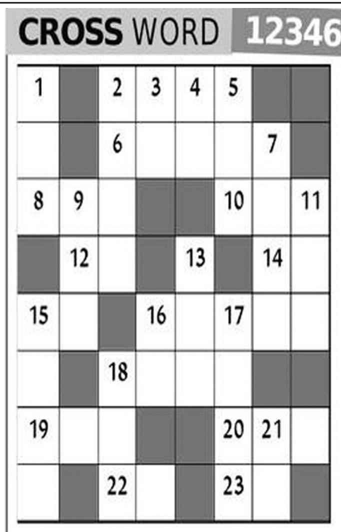

बाएं से दाएं

2. द्रवत्व, तरल होने का गुण 6. वह श्वेत पर्दा जिस पर चित्र दिखाया जाता है 8. योग्य, उचित, ठीक 10. धनुष, मेहराब 12. पुलिस की चौकी 14. भारी वस्तु के सरकने का शब्द 15. शब्द का अभिप्राय, मतलब 16. लड़ने के लिए चिल्लाकर बुलाना 18. नाम के अतिरिक्त अन्य नाम, उपाधि-पदवी 19. गणित संबंधी प्रश्न, लेन-देन आय-व्यय आदि का लिखा हुआ वर्णन 20. योग्य, विद्वान 22. मार्ग 23. जीवित रहना, सीढ़ी

ऊपर से नीचे

1. नीड़, पक्षियों के रहने का स्थान 2. तर्क करना, अंदाजा लगाना 3. धूल 4. बुरी आदत, 'लात' का संक्षिप्त रूप 5. तापोत्पादक (सं.) 7. एक फल जिसकी तरकारी बनती है 9. जैसा है वैसा, ठीक, सत्य 11. नष्ट होना, भागना 13. सांचे में ढाला जाना, बीत जाना 15. अंगहीन, काम न करने योग्य 16. लपलपाने की क्रिया या भाव 17. काम अथवा उद्योग में लगा रहने वाला 18. फालतू बचा हुआ 21. बगैर, छोड़कर

Solution 12345

शा	ली	न	ता		सि	ता	र
र		पा	र		ल	पं	त
दा		ई		अ	सि		
	पू		जं	ग	ला		दि
सि	त	म	ग	र		ज	या
कु	ना	म			वा	य	स
ड़		ता	ल	व्य		जा	ला
ना	ना		व	क्त	व्य		ई

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में परिश्रम करना पड़ेगा. वरिष्ठ अधिकरियों का सहयोग रहेगा. आर्थिक लाभ होगा. व्यर्थ वाद विवाद होगा. मित्र के कारण कार्यो में बाधायें आ सकती है. वर्ष केमध्य में पारिवारिक शारीरिक और मानसिक चिन्ता रहेगी. वर्ष के अन्त में शासन से लाभ का योग है. व्यक्ति विशेष का सहयोग प्राप्त होगा. धार्मिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. स्वास्थ्य में सतर्कता बांछनीय.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक परेशानियों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगाा कर्क राशि के व्यक्तियोंको मित्र के कारण कार्यो में बाधा प्राप्त हो सकती है. सिंह राशि के व्यक्तियों को स्वजनों से मतभेद हो सकता है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा. वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार होगा. खेलकूद के प्रति रूचि रहेगी. बचपन में स्वास्थ्य पीड़ा होगी. बाद में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. माता पिता का भक्त होगा. मनोवांछित सफलता मिलेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

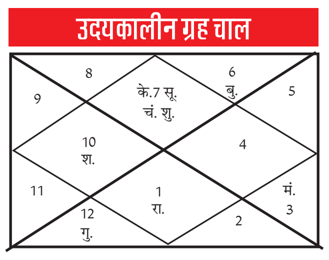

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण चर्तुदशी भौमवासरे रात 1/17, पुनर्वसु नक्षत्रे दिन 10/6, सिद्धि योगे रात 8/0, विष्टि करणे सू.उ. 5/30, सू.अ. 6/30, चन्द्रचार कर्क, पर्व- मासशिवरात्रि व्रत, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण अमावस्या को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से गेहू, जौ, चना, गुड़ खांड़, शक्कर मूॅगफ्ली तेलों में तेजी होगी. वायदा विचार आज 2 बजकर 11 मिनिट से 10 मिनिट के रूख पर व्यापार करके लाभ उठाना हितकर रहेगा. भाग्यांक 1583 है.

मेष- जीवनसाथी के व्यवहार से खिन्नता रहेगी. मांगलिक खर्च की रूपरेखा बनेगी. मित्रों एवं कुटुम्बियों से सहयोग मिलेगा. मानसिक संतोष रहेगा.

वृषभ- प्रियजन से मुलाकात उपयोगी रहेगी. ले देकर काम करवाने में नुकसान होगा. भ्रमण मनोरंजन एवं आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी. प्रयत्न करने पर लाभ होगा.

मिथुन- प्रापर्टी को लेकर चल रहे विवाद उभर सकते है. कोई पुराना काम बनेगा. दूर दराज की यात्राओं का योग है. सफ्लता प्राप्त होगी. रूका धन प्राप्त हो सकता है.

कर्क- अटके कार्य को समेटने में सफ्लता मिलेगी. कानूनी मामले सुलझेंगे. प्रयत्न करने पर लाभ होगा. निजी कार्यो की रूपरेखा तैयार होगी.

सिंह- अनुशासन की कमी से कार्यस्थल पर अव्यवस्था हो सकती है, लेनदेन के मामले सुलझ जायेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

कन्या- दूसरों के सुझावों को दिल से स्वीकार करेंगे, नौकरी एवं राजकीय कार्य में सफ्लता मिलेगी. निकटजनों का मार्गदर्शन मिलेगा.

तुला- उलझे मामले चतुराई से सुलझा लेंगे. जरूरतमंदों की मदद करके खुशी मिलेगी. प्रिय व्यक्ति से मानसिक पीड़ा होगी. लाभ कम व्यय की अधिकता रहेगी.

वृश्चिक- झूठ बोलकर अपना नुकसान कर लेंगे. मेहमानों की आवाजाही बनी रहेगी. कार्यो में व्यस्तता रहेगी. आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा.

धनु- आलोचना से घबराने की बजाये, डटकर मुकाबला करें. नुकसान से बच सकते हैं. मन में शांति और संतोष बना रहेगा. आय के मार्ग प्रशस्त होंगे.

मकर- लगातार नुकसान से आत्मविश्वास कमजोर पड़ सकता है, नये संपर्कों से लाभ होगा. शत्रुओं पर आपका प्रभाव रहेगा. लाभ संचित होगा. कोई बात मालुम होगी.

कुम्भ- सपने साकार करने के लिये मेहनत बढ़ाना आवश्यक है. विवादों से दूर रहें. मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. अतिथि वृषभमन का योग है.

मीन- युवाओं को कैरियर की चिन्ता रहेगी. तनाव की स्थिति में फैसला लेना मुश्किल है. पराक्रम में वृद्धि होगी. नौकर चाकर एवं अधिनस्थ का सहयोग रहेगा.

SUDOKU 7478

4							1	8
			6	7				2
			8					
	8	5						
	2			1			7	
						3	5	
					5			
1				4	7			
9	6							4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7477

1	9	7	4	8	6	2	3	5
4	5	3	9	1	2	7	6	8
2	6	8	7	3	5	9	1	4
5	3	1	2	7	9	4	8	6
9	2	4	8	6	1	5	7	3
7	8	6	5	4	3	1	9	2
3	4	9	6	2	7	8	5	1
6	7	2	1	5	8	3	4	9
8	1	5	3	9	4	6	2	7